

हकीकते दीन

किस्त -10

मुफ़विकरे इस्लाम डॉ० मौलाना सै० कल्बे सादिक साहब किब्ला

अल्लाह अरशे आज़म से पहले आसमान तक उतर कर आता है। आये उतर कर, बहुत अच्छी बात है। अब उसके बाद क्या कहूं कि वह आता काहे पर है? मआज़ अल्लाह गधे पर बैठ कर। कोई जानवर ही नहीं मिला सिवाये गधे के। हमारे यहाँ दूल्हा भी अगर गधा बनाया जाता है तो वह भी बेचारा घोड़े पर बिठा कर निकाला जाता है और वहाँ बेचारे अल्लाह मियां गधे पर बैठ कर तशरीफ ला रहे हैं मआज़ अल्लाह। अब ऐसे खुदा को कौन मानेगा। भय्या, मैं तो नहीं मानुंगा। आयतुल्लाह मुत्तहरी (ईरान) ने लिखा है कि ईरानियों को दो ही शौक होते हैं। एक हज करने का और एक कुरआने मजीद की तिलावत करने का शौक। आयतुल्लाह मुत्तहरी ने लिखा है कि एक ईरानी हाजी साहब जब हज करके वापस लौटे तो लोगों ने उनसे पूछा कि हज कैसा रहा। हाजी साहब ने जवाब दिया कि हज तो बहुत अच्छा रहा, बस एक बात का दाग़ दिल पर रह गया। लोगों ने पूछा क्या? हाजी साहब ने जवाब दिया कि रसूल करीम (स०) के रौजे की ज़ियारत हो गयी। सहाबाये कराम के रौजों की ज़ियारत हो गयी। अहलेबैत अतहार की मुबारक कब्रों की ज़ियारत हो गयी। ये सारी कब्रें और मज़ार तो मैंने देख लिये लेकिन अल्लाह तआला की कब्र की ज़ियारत मुझे नहीं हो सकी। इसीलिए मैं बार-बार अर्ज़ करता रहता हूं कि जेहालत को मिटाइये। जेहालत तो वह दीमक है कि जिस लकड़ी में लगी, उस लकड़ी को उसने खोखला करके खत्म कर दिया। तो अज़ीज़ों, अल्लाह को न मानने का नज़रिया कोई नया नहीं है बल्कि ये हमेशा से रहा है। नबियों के

दौर में रहा, रसूलों के दौर में रहा, आइम्मा-ए-ताहिरीन (अ०) के दौर में रहा।

“इमाम जाफ़रे सादिक (अ०) का मुनाज़रा”

इमाम जाफ़रे सादिक (अ०) के ज़माने में एक शख्स था जिसका नाम ‘अब्दुल्लाह’ था। बड़ा ज़बरदस्त स्कालर था, बहुत बड़ा फलसफी था। मगर खुदा को नहीं मानता था। मुल्हिद (नास्तिक) था। आलमे इस्लाम में उसने हलचल मचा दी, जिससे बहस की उसको चित कर दिया। जिससे बहस करता, साबित कर देता कि खुदा नहीं है। आखिर में इतना गुरुर (घमण्ड) पैदा हुआ कि अपने शहर से चला कि बस अब आखिरी मरहला रह गया है। मदीने जाकर इमाम जाफ़रे सादिक (अ०) को भी चित कर दूं तो मामला साफ हो जाये। अब जो वो मदीने आया तो उसके आने का इतना हुल्लड़ हुआ कि मदीना उमड़ पड़ा यह देखने के लिए कि अब यह आखिरी राउन्ड (Round) है, देखिये यहां क्या होता है? इमाम जाफ़रे सादिक (अ०) भी तशरीफ फरमां थे। अब मजमा इन्तेज़ार में है कि दोनों के दरमयान गुफ्तगू (Debate) हो और देखें कि नतीजा क्या है? एक तरफ ‘अब्दुल्लाह’ जा खुदा को नहीं मानता था और दूसरी तरफ नुमाइन्दे इलाही यानि इमाम जाफ़रे सादिक (अ०) मजमा नतीजे का इन्तेज़ार कर रहा है। दोनों के दरमयान सलाम जवाब हुआ। इमाम ने उसके बैठते ही पहला सवाल जो किया वो ये कि आप का नाम क्या है, वैसे ही वो उठा और चला गया। लोगों ने कहा कि कहां जा रहे हो? उस बेचारे

ने कहा मुनाजरा खत्म हो गया, मैं हार गया। एक राउन्ड भी तो नहीं हुआ और नाक आउट। लोगों ने कहा न बहस हुई न गुप्तगू हुई। इमाम ने सिर्फ नाम पूछा और तुम ने हार मान ली। ये हार कैसे हुई? अब्दुल्लाह ने कहा, ये (इमाम) तो बहुत तेज़ है भाई! जैसे ही मैं आया वैसे ही पूछते हैं कि मेरा नाम क्या है? मेरा नाम है 'अब्दुल्लाह' और इसके माने होते हैं 'अल्लाह का बन्दा'। अगर मैं इनको अपना नाम बताता तो ये पूछते कि जब अल्लाह ही नहीं है तो बन्दे किसके हैं? तो पहले जाकर अपना नाम बदलूँ फिर गुप्तगू के लिये आऊँ।

“अल्लाह की मारेफ़त के लिये रुहानी वसीलों की ज़रूरत”

आइम्मा-ए-ताहेरीन (अ०) ने फ़रमाया है कि खुदा को समझना है तो खुदा की मख़्लूक (Creatures) के ज़रिये अल्लाह को समझना। खुदा की ज़ात में कभी ग़ौर न करना वरना गुम्राह हो जाओगे। आपने कहा कि ये क्या बात हुई? बिल्कुल सही बात है। जाते इलाही में ग़ौर करने की इन्सान में सलाहियत ही नहीं है। इन्सान का दिमाग़ है महदूद और अल्लाह की ज़ात ला महदूद। लाहमहदूद की समाई महदूद में कैसे हो सकती है? हां, अल्लाह की ख़िलक़त से आप को उसके सिफ़ात का अन्दाज़ा और एक छोटी सी झलक मिल सकती है। मिसाल के तौर पर कल सुबह को जब कराची में सूरज निकले और सूरज निकलने के बाद कोई आदमी कहे कि मैं सूरज को नहीं मानता कि निकला है। तो आप क्या कहियेगा? आप कहियेगा कि भाई, अगर सूरज न निकला होता तो बग़ैर बिजली के रोशनी कैसे हो रही होती, धूप कैसे होती और ये सारी चीज़ें दिखायी कैसे दे रही होतीं। इन सब चीज़ों का दिखाई देना इस बात की दलील है कि कोई रोशनी का मरकज़ है जो चमक रहा है लेकिन उसने कहा कि मैं तो यूँ नहीं मानूँगा। मैं

तो सूरज को देखूँगा तो ही मानूँगा। तो आप ने भी कहा कि फिर देखो। लेहाज़ा उस बेचारे ने सूरज को देखना शुरू किया। अब सूरज तो दिखाई देता ही नहीं लेकिन उसको भी ज़िद है कि जब तक सूरज मुझे दिखाई नहीं देगा, उस वक़्त तक मैं अपनी नज़र हटाऊँगा नहीं और सूरज को भी ज़िद कि मैं दिखाई नहीं दूँगा। नज़रें लडाते-लडाते दो तीन घंटे तक जब वो सूरज को देखने की कोशिश कर चुका तो सूरज तो दिखायी न दिया लेकिन नतीजा क्या हुआ? सूरज को देखने की ज़िद में उसकी आंखों में जो रोशनी थी, वो भी ग़ायब हो गई। तो जब एक माददी नूर को देखने के बाद इन्सान की बसारत ज़ायल हो जाती है तो खालिक को बराहे रास्त (Direct) देखने के बाद बसीरत कैसे न ज़ायल हो जायेगी, अभी बात खत्म थोड़ी न हुई है। बाज़ इन्सान भी बहुत ज़हीन होते हैं। एक इन्सान ने कहा कि मैं देखूँगा सूरज को, मैंने पूछा कि आप सूरज को कैसे देखेंगे? उसने जवाब दिया कि कोई Problem नहीं होगी। मैं (Market) जाता हूँ और बाज़ार से एक किस्म (Type) की ऐनक (Glasses) लिये आता हूँ। उसको लगाने के बाद मैं जितनी देर तक चाहूँगा, सूरज को देखता रहूँगा। मैं कहूँगा कि आप होशियार हैं तो मैं भी होशियार हूँ। बस जैसे आप ये कहते हैं कि मैं एक खास ऐनक के वसीले से सूरज को देखूँगा, वैसे ही मैं भी कहूँगा कि अल्लाह को देखना है तो वसीले से देखिये। बराहेरास्त देखने की कोशिश न कीजिये। बस फर्क यह है कि सूरज का नूर माददी है इस लिए सूरज को देखने के लिये माददी ऐनक की ज़रूरत है और अल्लाह की मारेफ़त हासिल करने के लिए आपको कुछ रुहानी हस्तियों का वसीला बनाना पड़ेगा। इन हस्तियों के इल्म को देख कर अल्लाह के इल्म की हल्की सी झलक नज़र आयेगी। इनके रहम को देखकर अल्लाह के रहम का हल्का सा

अन्दाज़ा होगा। और इनके इन्साफ को देख कर अल्लाह की अदालत का अन्दाज़ा होगा।

“इस दुनिया में हर इन्सान अपना रोल अदा कर रहा है”

बाज़ लोग ऐतराज़ करते हैं कि अगर अल्लाह है तो दुनिया में इतनी नाइन्साफियां (Injustices) क्यों हो रही हैं? ये नाइन्साफी नहीं हैं कि कोई बेचारा फकीर है तो कोई अमीर है। कोई बीमार है तो कोई सेहतमन्द है। कोई अच्छी ज़िन्दगी गुज़ार रहा है तो कोई फाके कर रहा है। अगर आदिल अल्लाह मौजूद होता तो ये तफ़रीक़ात (Differentiation) न होतीं।

मैं अर्ज़ करता हूँ कि अगर कुरआन की आयतें आपके सामने होतीं तो आपके दिल में ये ख़्याल पैदा न होता। कुरआने मजीद ने कहा है कि ये दुनिया क्या है? ये दुनिया तो एक स्टेज (Stage) है और एक स्टेज के ऊपर ड्रामा (Drama) हो रहा है। हर इन्सान का अपना एक कैरेक्टर (Character) है। जिसको इस दुनिया में बादशाह बनाया गया है वो वाक़यी बादशाह नहीं है बल्कि बादशाह का रोल (Role) अदा कर रहा है। जिसे वज़ीर बनाया गया है उसे ये ग़लतफहमी न हो कि वाक़ई वो वज़ीर है वो तो वज़ीर का रोल अदा कर रहा है। जिसे ताजिर (Businessman) बनाया गया है वो ताजिर का रोल अदा कर रहा है। जिसे बीमार बनाया गया है वो बीमार का रोल अदा कर रहा है। अब कितनी ज़बरदस्त हिमाक़्त (बेवकूफी) की बात होगी कि वो इन्सान जो थोड़ी देर के लिए स्टेज के ऊपर बादशाह का रोल अदा कर रहा हो, वो वाक़ई अपने को बादशाह समझने लगे। इसी लिये मैं आप के सामने अर्ज़ करना चाहता हूँ कि अगर ज़िन्दगी के स्टेज पर आप देखेंगे तो कोई बादशाह दिखायी देगा, कोई वज़ीर दिखायी देगा, कोई अमीर दिखाई देगा

और कोई ग़रीब दिखाई देगा लेकिन जैसे ही ड्रामा ख़त्म होता है तो सब एक लिबास में आ जाते हैं। उसी तरह जो कैरेक्टर अपनी ज़िन्दगी का रोल अदा कर चुकता है और कब्र की मंजिल में जाता है तो सबका एक लिबास हो जाता है। सब एक लिबास (कफ़न) में अल्लाह की बारगाह में आ जाते हैं। अब जज़ा (Reward) देने की बात आई तो यह नहीं होगा कि बादशाह को पहला इनाम दिया जायेगा। अब ये देखा जायेगा कि जिसके जिम्मे जो कैरेक्टर दिया गया था, जो रोल दिया गया था, उसने वो रोल कैसे अदा किया। एक बादशाह ने जो फ़रायज़ (Duties) अंजाम दिये कि जो इसको अंजाम देना चाहिए थे। कहीं “फ़िरऔन” तो नहीं बन गया था? एक ग़रीब ने ग़ुरबत की वजह से मायूस होकर दीन के खिलाफ़ जेहाद तो नहीं छेड़ दिया। हर इन्सान इस दुनिया में एक रोल अदा कर रहा है और इनाम हमको आख़िरत की ज़िन्दगी में मिलेगा।

“मथुरा की तरह यहाँ भी अज़ादारी हो”

हिन्दुस्तान में एक शहर है जिसका नाम है ‘मथुरा’। मथुरा में सिर्फ़ चन्द शियों के घर हैं मगर वहाँ भी मजलिसें होती हैं, जुलूस उठता है और वो मथुरा शहर जिसे श्री कृष्ण जी की पैदाइश का शहर बताया जाता है, जहाँ सिर्फ़ चन्द शियों के घर हैं, बाकी बड़ी तादाद में हमारे सुन्नी भाई हैं जो ज्यादातर कुरैशी बिरादरी के हैं, लेकिन जब मोहर्रम का जुलूस उठता है तो हजारों लोगों का मजमा होता है और हिन्दू हज़रात भी वहाँ सबीलें लगाते हैं।

हज़ारों लोगों के जुलूस में सिर्फ़ चन्द शिया होते हैं, बाकी सब सुन्नी हज़रात। काश यही सूरते हाल यहाँ पाकिस्तान में भी होती और इन्शाल्लाह होगी। इन्शाल्लाह यहाँ भी सब मिलकर करबला का ज़िक्र करेंगे।